नवांश से कुंडली-मिलान

- अनुराधा मित्तल

कुण्डली मिलान! जैसा आप सबको विदित है कुण्डली मिलान का विषय इतना सरल नहीं है, जितना हमें दिखाई देता है। लेकिन हमारे **श्रद्धेय अध्यापक वी.पी. गोयल जी** ने इसको आसान बनाने के लिए हमें नवांश बिन्दु से कुंडली मिलान का एक विशेष विधि बताई जिसे युगल दंपत्तियों की कुण्डलियों पर लगाकर हम एक नजर में यह बता सकते हैं कि यह मिलान दोनों को विवाह बन्धन में बांधने योग्य है या नहीं। क्या यह युगल अपने वैवाहिक जीवन से प्रसन्न रहेगा, कहीं विवाहोपरान्त समस्याओं का सिलसिला तो आरम्भ नहीं हो जाएगा।

1. इस विधि की जांच हमने केवल युगल की नवांश कुंडलियों के सप्तमेश के द्वारा की है।

2. एक ओर स्त्री नवांश कुंडली के सप्तमेश की स्थिति, पुरुष की नवांश कुंडली में कैसी है और दूसरी ओर पुरुष नवांश कुंडली के सप्तमेश की स्थिति, स्त्री की नवांश कुंडली में कैसी है। जिसकी भी स्थिति एक दूसरे के नवांश में शुभ या अशुभ होगी उसी के आधार पर वैवाहिक जीवन की सफलता का संकेत देंगे। यदि दोनों के सप्तमेश की अशुभ स्थिति है तो दोनों विवाहोपरान्त अप्रसन्न रहेंगे और यदि शुभ है तो दोनों के संबंधों में मधुरता बनी रहेगी। एक का सप्तम नवांशस्वामी पापप्रभाव में होगा और दूसरे का सही स्थिति में होगा तो भी जीवन समस्याओं का निदान करता हुआ सरलता से बीत जाएगा।

आइए अब इस तथ्य को हम आपके समक्ष कुछ कुण्डलियों के द्वारा बताने का प्रयास करेंगे-

उदाहरण–1

पति–28 अगस्त 1979/08:55/दिल्ली

पत्नी–12 मार्च 1981/10:40/दिल्ली

विवाह में समस्या है। विवाह के तीन माह बाद ही झगड़े आरम्भ हो गए क्योंकि स्त्री का वेतन पति के वेतन से अधिक था। वर्तमान में तलाक की स्थिति बनी हुई है।

पत्नी का सप्तम नवांशेश मंगल पति के नवांश में दशम भाव में गुरु के साथ स्थित है। पत्नी का गुरु वक्री है। पति के नवांश में यह मंगल छठे भाव का स्वामी होकर लड़ाई झगड़े को दर्शा रहा है। मंगल का स्वभाव उग्र है।

पति के सप्तम नवांशेश को देखें जो कि गुरु है तो यह गुरु पत्नी के नवांश में वक्री शनि के साथ लग्नस्थ है और राहु–केतु अक्ष में होने से अत्यधिक

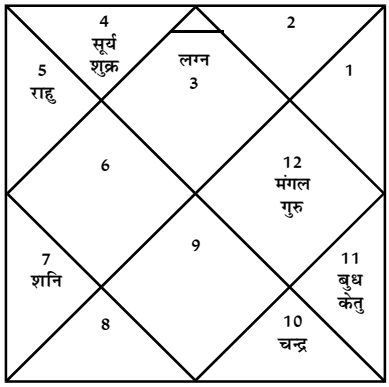

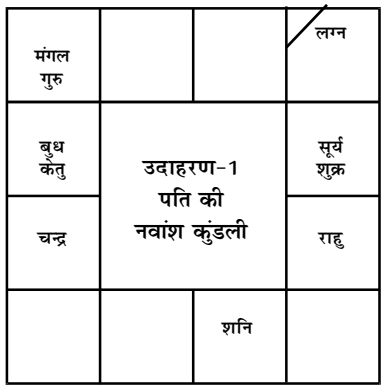

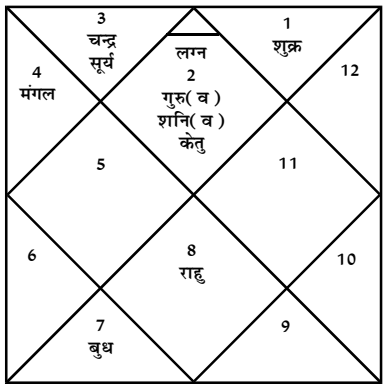

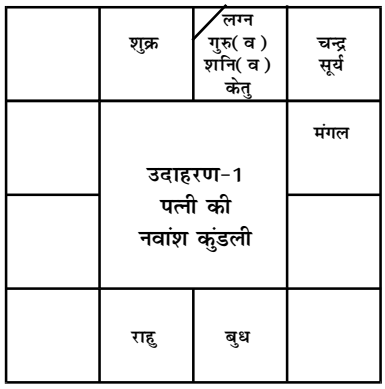

पीड़ित है। अत: आपस में पैकेज को लेकर झगड़े शुरू हो गए। इस प्रकार से केवल दोनों की नवांश कुंडलियों से ही विवाह में झगड़े का कारण दिख गया।

विवाह के समय लड़के की कुण्डली में गुरु/राहु का छिद्र दशा चल रही थी। इसीलिए विवाह से पूर्व दशाओं का विचार भी अत्यावश्यक है। दशाओं का संबंध छठे या द्वादश नवांश से तो नहीं है। छठे व सातवें नवांश की दशा एक साथ चले तो उस समय विवाह नहीं करनी चाहिए।

उदाहरण-2

पति-01 अगस्त 1960/10:50/फुलेरा

पत्नी-01 अगस्त 1966/23:45/भटिण्डा

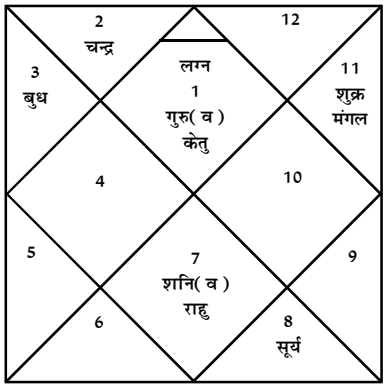

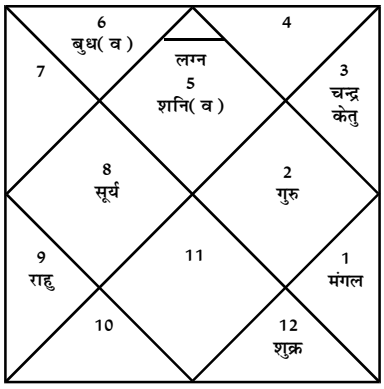

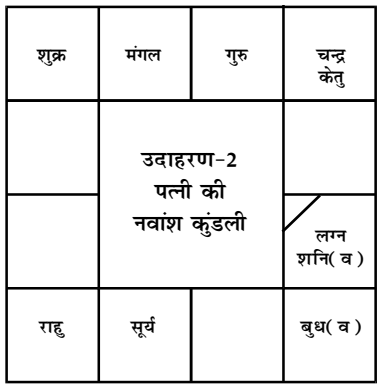

यह एक सुखी वैवाहिक जीवन का उदाहरण है। एकल परिवार है और दोनों नौकरी करते हैं।

पत्नी का सप्तम नवांशेश शनि पति के नवांश में सप्तम भाव में उच्च का होकर राहु के साथ स्थित है। शनि व राहु दोनों ही अपने राशीश शुक्र के नक्षत्र में हैं। शनि-शुक्र का परिवर्तन भी है और तीनों मित्र भी हैं। हालांकि केतु की दृष्टि है परंतु केतु गुरु के नक्षत्र में होकर गुरु के साथ स्थित है, यहां गुरु-केतु का भी नक्षत्र परिवर्तन है। गुरु की शनि पर भी दृष्टि है।

पति का सप्तम नवांशेश शुक्र है। यह शुक्र पत्नी के नवांश में अष्टम भाव में उच्च का है और गुरु से परिवर्तन में है तथा कुटुम्ब भावस्थ उच्च के बुध से दृष्ट है।

इस एकल-बिन्दु नवांश मिलान विधि से हमें सारी स्थिति का ज्ञान हो गया यदि हम पारम्परिक मिलान को देखते तो हम ये मिलान कभी नहीं करते क्योंकि इसमें सूक्ष्म नाड़ी दोष भी है और गण दोष भी। चूंकि लड़का राक्षस गण का और लड़की देव गण की है, अत: हम यही सोचते कि विवाह के बाद समस्याएं बनी रहेंगी।

उदाहरण-3

पति- 26 जनवरी 1964/22:30/दिल्ली

पत्नी- 11 नवम्बर 1975/08:30/दिल्ली

यह विवादग्रस्त विवाह का उदाहरण है। पुरुष एक गंभीर दुर्घटना के कारण यह दंपत्ति वैवाहिक सुख प्राप्ति में असमर्थ हो गए और बाद में इनका तलाक हो गया।

पत्नी का सप्तम नवांशेश बुध पति के नवांश में छठे भाव में उच्च का तो है लेकिन राहु-केतु अक्ष में भी है और शनि के साथ है। पत्नी के सप्तम नवांशेश का पति के नवांश में छठे भाव से संबंध रोग, दुर्घटना, तलाक, कानूनी विवाद को दर्शाता है और इस भाव पर द्वादश भाव में उच्चस्थ परंतु मारकेश शुक्र तथा अष्टमेश/लग्नेश मंगल की दृष्टि है।

पति का सप्तम नवांशेश शुक्र जो विवाह का कारक होकर विदेश के द्वादश

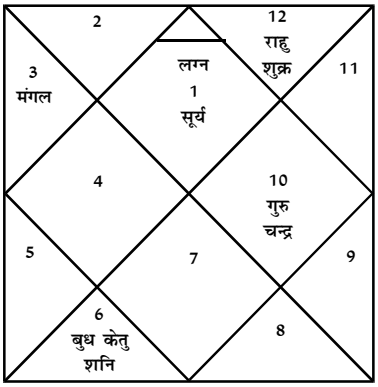

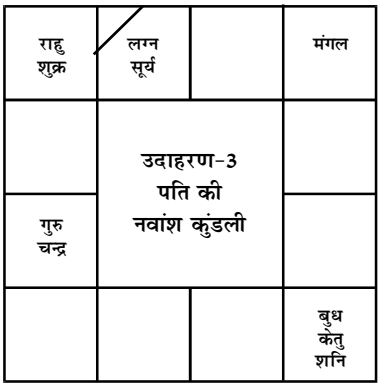

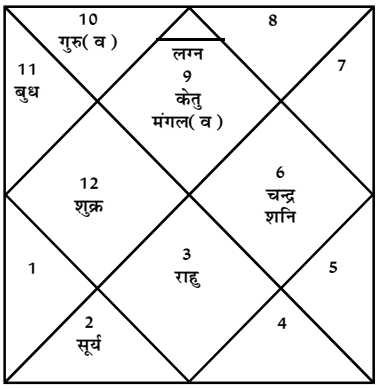

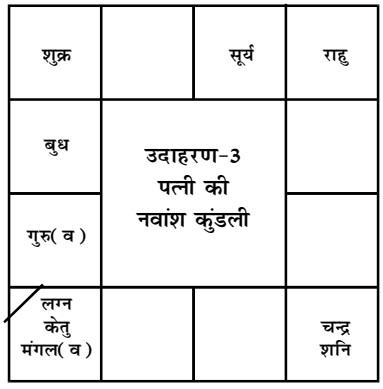

भाव में स्थित है। तृतीय-छठे-अष्टम-द्वादश सभी मृत्यु कारक भावों से स्त्री के सप्तम नवांशेश का संबंध बन गया है जो पत्नी के जीवनसाथी का भाव है। इसी कारण इनके पति को मृत्युतुल्य कष्ट भोगना पड़ रहा है। पति के षष्ठेश-सप्तमेश में 1^0 का ही अंशात्मक अंतर है जिससे कोर्ट केस तथा तलाक की संभावना बनती है।

पुनः हमें इस नवांश-मिलान विधि से वैवाहिक जीवन की स्थिति, दुर्घटना और तलाक सभी दिख गए जबकि पारम्परिक मिलान भी ठीक-ठाक ही है।

उदाहरण-4

पति- 18 अक्तूबर 1925/05:15/नैनीताल

पत्नी- 22 मई 1930/20:35/नैनीताल

यह सुखी वैवाहिक जीवन का उदाहरण है। लेकिन 1993 में पत्नी की कैन्सर से मृत्यु हो गई।

पत्नी का सप्तम नवांशेश बुध पति के नवांश में सप्तम भाव में स्थित है और लग्नस्थ मंगल से दृष्ट है।

पति का सप्तम नवांशेश गुरु पत्नी के नवांश के सप्तम भाव में वक्री शनि के साथ स्थित है और लग्नस्थ सूर्य व मंगल से दृष्ट है अर्थात् पति का सप्तम नवांशेश अधिक पीड़ित है जो कि पति के जीवनसाथी का भाव भी है। पत्नी का नवांश लग्न स्वामी गुरु और पति का नवांश लग्न स्वामी बुध है। ये नियति ही थी कि दोनों का मिलकर बिछुड़ना भी निश्चित ही था। लेकिन जितने भी दिन साथ रहे खुश रहे। लगभग पचास वर्षों के सुखी वैवाहिक जीवन को खुशहाल ही कहा जाएगा।

इस नवांश बिन्दु कुंडली मिलान विधि को हमने लगभग सौ कुण्डलियों

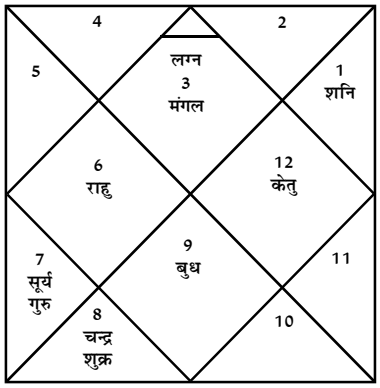

केतु	शनि		लग्न मंगल
	उदाहरण-4 पति की नवांश कुंडली		
बुध	चन्द्र शुक्र	सूर्य गुरु	राहु

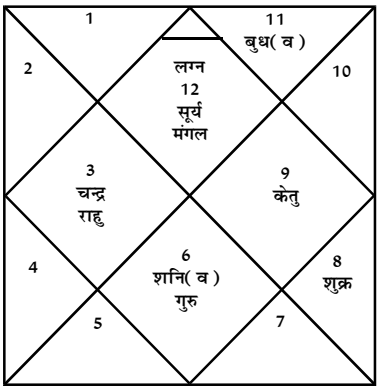

लग्न सूर्य मंगल			चन्द्र राहु
बुध(व)	उदाहरण-4 पति की नवांश कुंडली		
केतु	शुक्र		शनि(व) गुरु

पर लगाया है जिसमें से हमें लगभग 70% कुण्डलियों पर इसके संतोषजनक फल प्राप्त हुए है। अभी हमें इसे कम से कम एक हजार कुण्डलियों पर लगाने की जरूरत है तभी कोई निर्णय लिया जा सकता है। यदि आप सभी लोग भी इसमें सहयोग करें तो हमारे भारतीय विद्या भवन के श्रेष्ठ प्राध्यापक आदरणीय वी०पी० गोयल जी का यह शोध सफल सिद्ध होगा। कुंडलियां देते समय दो-तीन बातों का ध्यान रखें कि एक तो कुंडली में जन्म-विवरण का (तिथि-समय-स्थान) और दूसरे युगल के वैवाहिक जीवन से संबंधित घटनाओं की जानकारी सही हो।

इस लेख की लेखिका का अपना अनुभव - मेरी स्वयं की कुण्डली में 36 में से केवल 12 गुण मिलते हैं और नाड़ी, भकूट दोष, ग्रहमैत्री दोष भी उपस्थित है लेकिन उपरोक्त विधि के अनुसार नवांश-मिलान बहुत अच्छा है। मेरे दो बच्चे हैं।

*****